https://balipurdham.org/

श्री गुरु चालीसा

- दोहा -

श्री गुरु चरण का ध्यान धर गुरु चालीसा पाठ
गूरु मेरे ह्रदय बसे, हर पल पहरों आठ ॥

अवगुण मेरे भूलकर,प्रभु शरण तुम देय,
हरो मेरा अज्ञान सब, गुरु प्रेम मोहे देय ॥

जय गुरुदेव ज्ञान गुण सागर। जय हरीश तिहुँ लोक उजागर॥
शक्तिमान प्रभु के स्वामी। घट-घट के तुम अन्तर्यामी॥
तुमरी कृपा से शक्ति जागृत। होती क्रिया विचित्र उजागर॥
बुद्धि शुद्ध तुमारी किरीपा। मन निर्मल होता तब किरिया ॥
अग्नि रूप तुम निर्मल वेशा रहते तुमी शान्त परदेशा ॥
मन संकल्प से शक्ति जागे। विषय विकार सब बाहर भागे॥
गुरु रुष्ट नाहीं बच पायें। चाहे शंकर उसे छुड़ायें॥
शंकर रूप प्रकट तुम माही। किरीपा शिष्य वर्ग के ताईं ॥
मात-पिता तुम शिष्य वर्ग के। करते कृपा अनुग्रह करके।
गुरु छोड़ ईश्वर नहीं कोई। जग का पालनहार भी वोही ॥ गुरु से बढ़कर तत्त्व न कोई। करे अनुग्रह सो गुरु होई ॥ जग दावानल माही उबारे । माया अंधकूप ते काढ़े ।

https://balipurdham.org/

श्री गुरु चालीसा

https://balipurdham.org/

गुरुदेव जगत् उपजाता। उसमें ही फिर जगत् समाता ॥
गुरुदेव सब के रखवारे। भूत पिशाच नसावन हारे ॥
वेदशास्त्र तुमरो यश गावे । मन्त्र-यन्त्र सब महिमा गावें ॥
यज्ञ ज्ञान तप भी जो की जै। गुरु जाने बिन विर था छीजे ॥
गुरु चरणागत लीजै सोई। माया छूट परमपद होई ॥
गुरु मुरत जो सदा ध्याये। अमृत फल सहज वह पावै ॥
गु से अंधकार मिट जावे। रु शब्दे प्रकाश फैलावे॥
गुरुदेव है जगत् स्वामी। हर घट व्यापक अन्तर्यामी॥
ध्यान का मूल गुरु की मूरत। पूजा है चरणों की धूरत ॥
गुरु आदि अनादि पर देवा। उस से बढ़कर अन्य न देवा।।
गुरु रुष्ट नाहीं बच पायें। चाहे शंकर उसे छुड़ायें॥
मंत्र मूल गुरु उपदेशा। मोक्ष मूल है कृपा विशेषा॥
ता मन माही मैल न होवे। गुरु मन्त्र जो चित्त लगावें॥
गुरुदेव में वेद प्रकाशित। नमन करें मैने हो उल्लासित ॥
दिशा जाही गुरुदेव विराजे। ताही सुख करे नमन कराजे॥
गुरु सिमरन है ज्ञान उपाय ! अंधकार ताको मिट जाए ।

श्री गुरु चालीसा

https://balipurdham.org/

गुरु चैतन्य शाश्वत ऐसा। जैसे बना अनन्त अकासा॥
जीव चराचर में गुरु व्यापक। शिव शक्ति ज्यों सर्व प्रकाशक॥
शक्ति रूप वाहन अरूढा । तम का नाश करे अति गुढ़ा॥
जन्म-जन्म के पाप नसावें । अन्तर्मन में सुख उपजाई॥
ब्रह्मा विष्णु शेष महेशा। गुरुदेव ही सकल अशेषा ॥
भाव भक्ति से जो है ध्याता। गुरु की परा भक्ति वह पाता ॥
गुरु से बढ़कर दूजा नाहिं। सकल जगत् गुरुदेव के माहीं॥
गुरु सेवा पराङ्ग मुख जोहि। गुरु भक्ति न पावे सोई॥
नित्य शुद्ध है ब्रह्म सरूपा । चिदानन्द माया पर रुपा ॥
गुरु मारग जो चले अबाधा। मनोकामना पात अगाधा ॥
नित्य पाठ जो इसका करता। निर्भय हो हरिसेवा करता॥
ताको मन विश्राम है पाता। मोक्ष प्राप्त परम पद पाता ।।
श्री गजानन बिनय गुरु आगे। हिरदम माहीं प्रकट तम भागे।

-दोहा-

ध्यान धरो गुरुदेव का संकट कटे महान् । मन बुद्धि निर्मल बने, हो जावे कल्याण ॥